१०. एक कहानी यह भी

कहानी का सारांश

लेखिका का जन्म मध्य प्रदेश के भानपुरा गाँव में हुआ, पर उनकी यादें अजमेर से शुरू होती हैं। पिता जी विद्वान, सम्मानित और महत्वाकांक्षी व्यक्ति थे, पर स्वभाव से गुस्सैल और अहंकारी भी। उन्होंने आर्थिक संकट में भी अपने आत्मसम्मान से समझौता नहीं किया। दूसरी ओर माँ सरल, धैर्यशील और त्यागमयी थीं, जो पूरे परिवार के लिए हमेशा समर्पित रहीं।

लेखिका बचपन से ही अपने रंग-रूप के कारण हीन-भावना से ग्रस्त थीं। उनकी तुलना अक्सर अपनी गोरी और हँसमुख बहन सुशीला से की जाती। मोहल्ले के खेल, सहेलियाँ और पारिवारिक माहौल ने उनके बचपन को प्रभावित किया और बाद में उनकी कहानियों के पात्र भी इन्हीं अनुभवों से आए।

पिता जी का आग्रह था कि बेटियाँ केवल रसोई तक सीमित न रहें बल्कि शिक्षा और समाज के व्यापक सरोकारों से जुड़ें। इसी कारण मन्नू भंडारी घर की राजनीतिक बहसों में भी शामिल होने लगीं। कॉलेज में हिंदी की अध्यापिका शीला अग्रवाल ने उनमें साहित्य के प्रति गंभीर रुचि जगाई। धीरे-धीरे लेखिका का झुकाव स्वतंत्रता आंदोलन की गतिविधियों की ओर भी बढ़ा। वे प्रभात फेरियों, हड़तालों और जुलूसों में शामिल हुईं, भाषण देने लगीं और युवाओं में उत्साह जगाने लगीं।

शुरुआत में पिता जी उनकी गतिविधियों से नाराज़ हुए, पर जब समाज के प्रतिष्ठित लोग उनकी सराहना करने लगे तो उन्हें भी गर्व होने लगा। यह विरोध और गर्व का मिश्रण ही लेखिका के जीवन का आधार बना।

अंत में, लेखिका बताती हैं कि 15 अगस्त 1947 को देश आज़ाद हुआ। यह पल उनके लिए व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि था।

मुख्य संदेश : यह आत्मकथा दिखाती है कि परिवार और समाज का वातावरण व्यक्ति के व्यक्तित्व को गहराई से गढ़ता है। मन्नू भंडारी ने कठिनाइयों, हीन-भावनाओं और विरोधों के बीच अपना रास्ता बनाया और साहित्य तथा समाज दोनों में सक्रिय योगदान दिया।

शब्दार्थ

- **ओहदा** – पद
- **दरियादिली** – अति उदारता
- **अहंवादी** – घमंडी
- **भग्नावशेष** – खंडहर
- **बल-बूता** – ज़ोर / ताकत
- **विस्फारित** – फैला हुआ
- **भागीदार** – हिस्सेदार
- **हाशिए** – किनारे
- **यातना** – कष्ट
- **विश्वासघात** – धोखा / द्रोह
- **शक्की** – शक करने वाला
- **पितृ गाथा** – पिता की कथा
- **खूबी** – अच्छाई
- **खामी** – बुराई / कमी

www.onepointlearning.com

- **ताना** – वस्त्र तैयार करने हेतु लंबाई में फैलाया गया सूत
- **बाना** – वस्त्र तैयार करने हेतु चौड़ाई में भरे जाने वाला सूत
- **मरियल** – शक्तिहीन
- **उबरना** – छुटकारा पाना
- **अचेतन** – संज्ञाशून्य
- **झल्लाना** – भत्स्ना करना / गुस्से से बोलना
- **व्यथा** – दुःख
- **कुंठा** – निराशाजन्य / अतृप्त भावना
- **प्रतिच्छाया** – प्रतिरूप / चित्र
- **आसन्न** – संबंधित / जुड़ा हुआ
- **ज़्यादती** – अत्याचार
- **फ़रमाइश** – अनुरोध
- **पैतृक-पुराण** – पिता से संबंधित कथा
- **दायरा** – कार्य क्षेत्र
- **पाबंदी** – प्रतिबंध
- **शिद्दत** – प्रबलता / कठोरता
- **कल्चर** – संस्कृति
- **विच्छिन्न** – अलग किया हुआ
- **संकुचित** – सीमित
- **सुघड़** – कुशल
- **पाक-शास्त्री** – भोजन बनाने का विशेषज्ञ
- **नुस्खा** – दवा एवं उसकी सेवन विधि
- **भटियारखाना** – असभ्य लोगों की बैठक
- **भट्ठी** – चूल्हा
- **शगल** – कण धंधा / मनोरंजन
- **आक्रांत** – कष्टग्रस्त
- **अहमियत** – महत्त्व
- **धारणा** – व्यक्तिगत विश्वास
- **दमखम** – ताकत
- **जोश-खरोश** – उत्साह
- **उन्माद** – जुनून / सनक
- **बवंडर** – उपद्रव
- **निषेध** – मनाही
- **वर्चस्व** – दबदबा
- **गुबार** – उद्गार
- **रौब** – धाक / दबदबा
- **गद्गद** – प्रसन्न
- **आह्वान** – पुकार
- **दकियानूसी** – पुराने विचारों का समर्थक
- **हुड़दंग** – उपद्रव
- **अंतरंग** – घनिष्ठ
- **गर्मजोशी** – जोश सहित
- **धुआँधार** – जोरदार
- **अंतर्विरोध** – मन की भावनाओं में विरोध
- **निषिद्ध** – जिस पर रोक लगाई गई हो
- **चिर** – प्राचीन
- **प्रतीक्षित** – जिसकी प्रतीक्षा की गई हो
- **बिलाना** – खोना
- **राजेंद्र** – हिंदी के प्रमुख कथाकार एवं हंस पत्रिका के संपादक राजेंद्र यादव
- **महाभोज** – मन्नू भंडारी का चर्चित उपन्यास, जिसमें 'दा साहब' प्रमुख पात्र हैं

मुहावरे

- **आग-बबूला होना** – अति क्रोधित होना
- **थू-थू करना** – निंदा करना

www.onepointlearning.com

प्रश्न - अभ्यास

1. **लेखिका के व्यक्तित्व पर किन-किन व्यक्तियों का किस रूप में प्रभाव पड़ा?**

   उत्तर: लेखिका पर सबसे अधिक प्रभाव उनके पिता और माँ का पड़ा। पिता विद्वान, महत्वाकांक्षी और कठोर स्वभाव के थे। उन्होंने बेटियों को रसोई से दूर रखकर शिक्षा और बहसों से जोड़ा। माँ धैर्यवान, त्यागमयी और सहनशील थीं। इसके अतिरिक्त बहन सुशीला से तुलना ने उनमें हीन-भावना जगाई। वहीं प्राध्यापिका शीला अग्रवाल ने साहित्य के प्रति गहरी रुचि जगाई और स्वतंत्रता आंदोलन से जुड़ने की प्रेरणा दी।

2. **इस आत्मकथ्य में लेखिका के पिता ने रसोई को 'भटियारखाना' कहकर क्यों संबोधित किया है?**

   उत्तर: लेखिका के पिता का मानना था कि रसोई में समय बिताना प्रतिभा को व्यर्थ करना है। उनके अनुसार रसोई यानी भटियारखाना वह स्थान था जहाँ रहकर व्यक्ति अपनी क्षमता को भट्टी में झोंक देता है। वे चाहते थे कि उनकी बेटियाँ पढ़ाई और सामाजिक कार्यों से जुड़ें, न कि केवल गृहकार्य तक सीमित रहें।

3. **वह कौन-सी घटना थी जिसके बारे में सुनने पर लेखिका को न अपनी आँखों पर विश्वास हो पाया और न अपने कानों पर?**

   उत्तर: घटना यह थी कि कॉलेज की प्रिंसिपल ने लेखिका के आंदोलनों के कारण उनके पिता को बुलाया। लेखिका को लगा कि पिता जी बहुत नाराज़ होंगे, परंतु लौटकर उन्होंने गर्व से बताया कि प्रिंसिपल कह रही थीं— "सारा कॉलेज मन्नू के इशारे पर चलता है।" यह सुनकर पिता जी गुस्से की जगह गर्व महसूस करने लगे। यह देखकर लेखिका को अपनी आँखों और कानों पर विश्वास नहीं हुआ।

4. **लेखिका की अपने पिता से वैचारिक टकराहट को अपने शब्दों में लिखिए।**

   उत्तर: पिता जी चाहते थे कि उनकी बेटी समाज में विशिष्ट बने, पर वे साथ ही सामाजिक मान–मर्यादा और परंपराओं को भी महत्व देते थे। दूसरी ओर लेखिका स्वतंत्रता आंदोलन, हड़तालों, जुलूसों और भाषणों में खुलकर भाग लेती थीं। उनके लिए बंधनों और वर्जनाओं का कोई महत्व नहीं था। यही कारण था कि पिता और बेटी के बीच अक्सर वैचारिक टकराहट होती रही।

5. **इस आत्मकथ्य के आधार पर स्वाधीनता आंदोलन के परिदृश्य का चित्रण करते हुए उसमें मन्नू जी की भूमिका को रेखांकित कीजिए।**

   उत्तर: 1940 के दशक में पूरा देश स्वतंत्रता आंदोलन की लहर में डूबा था। प्रभात फेरियाँ, हड़तालें, जुलूस और भाषण उस समय के युवाओं के जीवन का हिस्सा थे। मन्नू भंडारी ने भी इन सब में सक्रिय रूप से भाग लिया। वे भाषण देतीं, आंदोलन का नेतृत्व करतीं और छात्राओं को संगठित करतीं। इस प्रकार वे स्वतंत्रता आंदोलन की युवा शक्ति का प्रतिनिधित्व करती हैं।

www.onepointlearning.com

रचना और अभिव्यक्ति

6. **लेखिका ने बचपन में अपने भाइयों के साथ गिल्ली डंडा तथा पतंग उड़ाने जैसे खेल भी खेले किंतु लड़की होने के कारण उनका दायरा घर की चारदीवारी तक सीमित था। क्या आज भी लड़कियों के लिए स्थितियाँ ऐसी ही हैं या बदल गई हैं, अपने परिवेश के आधार पर लिखिए।**

उत्तर (संकेतात्मक): आज की लड़कियों की स्थिति पहले से काफी बदल चुकी है। वे खेलकूद, शिक्षा, राजनीति, सेना, विज्ञान और तकनीक हर क्षेत्र में भाग ले रही हैं। अब उनका दायरा घर की चारदीवारी तक सीमित नहीं रहा। हालाँकि कुछ ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में अभी भी परंपरागत सोच मौजूद है।

7. **महानगरों में 'पड़ोस कल्चर' के अभाव पर अपने विचार लिखिए।**

मनुष्य के जीवन में आस-पड़ोस का बहुत महत्त्व होता है, परंतु महानगरों में रहने वाले लोग प्रायः 'पड़ोस कल्चर से वंचित रह जाते हैं। इस बारे में अपने विचार लिखिए।

उत्तर (संकेतात्मक): पहले पड़ोस परिवार की तरह होता था। लोग एक-दूसरे के सुख-दुख में भागीदार बनते थे। महानगरों में फ्लैट-कल्चर और व्यस्त जीवन ने लोगों को अलग-थलग कर दिया है। आज पड़ोसी एक-दूसरे को जानते तक नहीं। इससे समाज में अकेलापन और असुरक्षा की भावना बढ़ रही है।

8. **लेखिका द्वारा पढ़े गए उपन्यासों की सूची बनाइए और उन उपन्यासों को अपने पुस्तकालय में खोजिए।**

उत्तर: लेखिका द्वारा पढ़े गए उपन्यासों की सूची

- शरदचंद्र : श्रीकांत आदि
- प्रेमचंद : गबन आदि
- जैनेंद्र : सुनीता, त्यागपत्र
- अज्ञेय : शेखर : एक जीवनी, नदी के द्वीप
- भगवतीचरण वर्मा : चित्रलेखा
- यशपाल : अनेक उपन्यास

(विद्यार्थी इनको अपने पुस्तकालय में खोज सकते हैं।)

9. **आप भी अपने दैनिक अनुभवों को डायरी में लिखिए।**

उत्तर: यह आत्मकथात्मक है। विद्यार्थी अपने अनुभव लिखें।भाषा- अध्ययन

भाषा- अध्ययन

10. **इस आत्मकथ्य में मुहावरों का प्रयोग करके लेखिका ने रचना को रोचक बनाया है। रेखांकित मुहावरों को ध्यान में रखकर कुछ और वाक्य बनाएँ-**

(क) इस बीच पिताजी के एक निहायत दकियानूसी मित्र ने घर आकर अच्छी तरह पिताजी की लू उतारी।

→ लू उतारना – परीक्षा में खराब परिणाम आने पर अध्यापक ने विद्यार्थियों की खूब लू उतारी।

(ख) वे तो आग लगाकर चले गए और पिताजी सारे दिन भभकते रहे।

→ आग लगाना – उसकी बातों ने दोनों दोस्तों के बीच आग लगा दी।

(ग) बस अब यही रह गया है कि लोग घर आकर थू-थू करके चले जाएँ।

→ थू-थू होना – रिश्वत लेते पकड़े जाने पर अधिकारी की सब जगह थू-थू हो गई।

(घ) पत्र पढ़ते ही पिताजी आग-बबूला।

→ आग-बबूला होना – चोरी का इल्ज़ाम सुनते ही वह आग-बबूला हो गया।

www.onepointlearning.com